हैन्ड्स टू हार्ट्स इन्टरनेशनल

हैन्ड्स टू हार्ट्स इन्टरनेशनल (एच.एच.आई.) एक गैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) है जो बच्चों की देखरेख करने वालों को प्रारम्भिक बाल्यावस्था विकास (ई.सी.डी.) के क्षेत्र में प्रशिक्षण देकर और परवरिश से जुड़े कौशलों को विकसित करके विश्व भर में (0 से 3 साल की उम्र के) कमजोर बच्चों के स्वास्थ्य और विकास के स्तर को बेहतर बनाने के लिए काम करता है।

एच.एच.आई. क्या करता है?

एच.एच.आई. एक सरल, लचीला, किफायती और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करता है। एच.एच.आई.का प्रशिक्षण महिलाओ में/बच्चों की देखरेख करने वालों में यह काबिलीयत और आत्मविश्वास पैदा करता है कि वे अपने बच्चों के भाषाई, सामाजिक, संज्ञानात्मक और शारीरिक विकास को आगे बढ़ाने की तथा उनके बेहतर स्वास्थ्य और पोषण हासिल करने में सर्वश्रेष्ठ सहयोग देने की अपनी क्षमता को निखार सकें। इस प्रशिक्षण के दौरान आपसी जुड़ाव भी बढ़ता है, जो भविष्य के सारे रिश्तों और एक स्वस्थ सामाजिक ताने–बाने की बुनियाद होता है। ई.सी.डी. के बारे में गुणवत्तापूर्ण जानकारी और ज्ञान प्रदान करने और इसे संस्कृति–विशेष के उपकरणों, परम्पराओं और प्रचलनों से जोड़ देने की पद्धति का इस्तेमाल करने के कारण एच.एच.आई.द्वारा दी जाने वाली जानकारियाँ सभी जगह इस्तेमाल की जा सकती हैं। इसमें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि प्रशिक्षण हासिल करने वालों के पास संसाधनों की उपलब्धता कैसी है या उनकी साक्षरता का स्तर क्या है।



भारत में एच.एच.आई.का इतिहास

एच.एच.आई.ने 2006 में दक्षिण भारत में अनाथालयों के साथ मिलकर काम करना शुरू किया एक साल के भीतर ही, भारत की समेकित बाल विकास सेवा योजना (आई.सी.डी.एस.) द्वारा आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायकों को एच.एच.आई.भेजा जाने लगा। अब तक करीब 4000 लोग एच.एच.आई.का ई.सी.डी. प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

एच.एच.आई.के कार्यों में उनका सबसे महत्त्वपूर्ण भागीदार है, 'विश्व युवा केन्द्र', जो ओडिशा स्थित एक ऐसा सामुदायिक विकास संगठन है जो मुख्य रूप से दरिद्र ग्रामीण लोगों के साथ काम करता है।

2012 में, सेव द चिल्ड्रन इण्डिया ने एच.एच.आई.के साथ अनुबन्ध किया कि वह अपनी कार्य–पद्धति को लागू करके आंध्रप्रदेश में 0–3 वर्ष तक के बच्चों के लिए उनके पहले कार्यक्रम को तैयार करे। एच.एच.आई.ने सेव द चिल्ड्रन में 17 शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित किया फिर इन शिक्षक प्रशिक्षकों ने 292 आई.सी.डी.एस. कार्यकर्ताओं, 6700 माताओं को प्रशिक्षित किया और अन्ततोगत्वा 10000 से ज्यादा कमजोर शिशुओं को लाभ पहुँचाया

इन सारी भागीदारियों के माध्यम से, अब तक भारत में (तमिलनाडू, केरल, ओडिशा, दिल्ली और आंध्रप्रदेश के राज्यों में) बच्चों की देखभाल करने वाले 22000 से ज्यादा लोग (अधिकृत सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता, स्वयं सहायता समूहों के भागीदार, अनाथालयों की देखभाल करने वाले, शिशु पालनाघरों के कार्यकर्ता, आई.सी.डी.एस. कार्यकर्ता, और माताएँ) एच.एच.आई.के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले चुके हैं।

एच.एच.आई.प्रशिक्षण के लाभ

बच्चों के लिए

- बीमारी और तनाव की कम घटनाएँ
- वजन बढ़ने और पोषण के स्तर में सुधार
- देखभाल करने वाले के साथ बेहतर जुड़ाव
- स्वास्थ्य और समग्र विकास में सुधार

महिलाओं और देखभाल करने वालों के लिए



- ई.सी.डी. के बारे में 35% से 40% अधिक ज्ञान
- युगाण्डा में अपने बच्चे को भाषा की शिक्षा देने वाली माताओं की संख्या में 193% की बढ़ोतरी
- बच्चे को संज्ञानात्मक प्रेरणा दे पाने में; उसे भोजन कराते हुए उसे सिखाने या उससे बात करने में; और उसके साथ खेलते हुए बिताए गए समय में 100% की बढ़ोतरी;
- उसे शारीरिक दण्ड देने, और खुद तनावग्रस्त हो जाने में कमी
- पोषण योजनाओं, और भोजन कराने के तरीकों में सुधार

लोगों के लिए

- महिलाओं और समुदाय के सदस्यों का सशक्तीकरण
- दीर्घकालिक सामाजिक लागतों में कमी
- सामाजिक जुड़ाव की स्थिति में सुधार
- समुदायों के भीतर बच्चों के साथ ज्यादा मित्रवत आचरण और संवाद

एच.एच.आई.भागीदारियों के माध्यम से काम करता है

एच.एच.आई.का प्रतिरूप उसके भागीदारों के लिए तथा जिन लोगों के लिए वे काम करते हैं उनकी जरूरतों और वास्तविकताओं की दृष्टि से बेहद लचीला और अनुकूलन की क्षमता वाला होता है। एच.एच.आई.के कार्यक्रम का कहीं भी बहुत सरलता से अनुकरण किया जा सकता है। इसमें प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण (ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स या टी.ओ.टी.) की पद्धति का इस्तेमाल किया जाता है। उसके भागीदारों और बच्चों की देखभाल करने वालों की क्षमताओं का निर्माण करने के लिए उनको बाद में भी सहयोग प्रदान किया जाता है ताकि कमजोर बच्चों के प्रारम्भिक बाल्यावस्था विकास में सुधार हो।

एच.एच.आई.के काम को सराहना मिलना

- एशिया रीजनल नेटवर्क ऑन अर्ली चाइल्डहुड (ए.आर.एन.ई.सी.) संस्था ने ओडिशा में एच.एच.आई.के काम की पड़ताल की और इसे आशाजनक कार्य माना। उनका शोध 2011 की ए.आर.एन.ई.सी. रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ।
- ओडिशा में फेटजर इंस्टीट्यूट की आर्थिक सहायता से एच.एच.आई.के कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जा रहा है।
- 2011–13 के बीच प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में यूनेस्को एशिया का सलाहकार बनने की उपलब्धि।

अनुवाद : सत्येन्द्र त्रिपाठी

